॥ अढीद्वीप वर्णनम् ॥

॥ तीर्छा लोकमां असंख्याता द्वीप, समुद्र छे, तेना मध्यमां पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढीद्वीपने विषे मनुष्यनी वस्ती छे ते अढीद्वीपमां पण प्रथम जंबुद्वीप, मध्यमां गोल थालीने आकारे लाख योजन नो छे तेमा सात वासक्षेत्र छे, तिहां पहेलुं दक्षिण दिशा तरफ जेमां आपणे वसीये छेयें, ते भरत क्षेत्र छे, तेनी वचमां वैताढ्य पर्वत छे, ते पर्वतनी दक्षिण बाजु त्रण खंम तथा उत्तर बाजु त्रण खम मली छ खंम, गंगा अने सिंधू नदीथी थयेला छे. ते छए खंममां बत्रीश हजार देश छे ए भरत क्षेत्रनी सीमा चूल हिमवत पर्वत सुधी छे हिमवत पर्वत पछी *हिमवत नामें युगलियानुं क्षेत्र छे ते पछी महा* हिमवत पर्वत छे, ते पछी वली हरिवर्ष नामे युगलियानु क्षेत्र छे ते पछी निषध पर्वत छे पछी पूर्व पश्चिम एवा बे विभागे वेहेचाएुं थकु महाविदेह क्षेत्र छे तेनी वचमां मेरु पर्वत छे, अने मेरुनी उत्तर दक्षिणें देवकुरु तथा उत्तरकुरु ए बे युगलीयानां क्षेत्रो छे तथा चार महोटा गजदंता पर्वत छे, पछी नीलवंत पर्वत छे, पछी रम्यक नामें युगलीयानुं क्षेत्र छे, पछी रूपी पर्वत छे, ते पछी हिरण्यवत नामें युगलीयानु क्षेत्र छे, ते पछी शिखरी पर्वत छे पछी छेहेलुं उत्तर तरफ ऐरवत क्षेत्र छे, अने जंबुद्वीपने फरतो बे लाख योजन पहोलो लवण समुद्र छे. तेने फरतो

चार लाख योजन पहोलो धातकी खम चूडीने
कारे छे, तेने फरतो आठ लाख योजन पहोलो
लोद समुद्र छे तेने फरतो शोल लाख योजन
जो पुष्कर द्वीप छे, तेने अर्द्ध नागे आठ लाख
न सुधीमा मनुष्य छे, तेटलो नाग मानुषोत्तर प
करी वींटेलो छे, पूर्वे जंबुद्वीपमां जे पर्वत तथा
क्षेत्र कह्या, तेथी बमणां धातकीखमुमां छे,
पुष्करार्द्ध द्वीपमा पण तेटलाज बमणां छे ॥ इ

॥ अथ मेरुपर्वतस्य संक्षेपवर्णनम् ॥

॥ मेरु पर्वत कनकमय वाटलो छे,तेनी उचाइ
ख योजननी छे, तेमा एक हजार योजननो काम
थ्वी माहे छे, अने उपर नवाणु हजार योजन
तथा ते शिखरने विषे एक हजार योजन पहोलो
अने नीचे धरतीमा तलीये दश हजार नेवु यो
नी उपर वली एक योजनना अगीयार नाग कर
तेवा दश नाग जेटलो पहोलो छे, ते लाख योजन
उचा मेरुनी उपर वली चालीश योजननी उची चू
का छे, ते चूलिकानी उपर एक शाश्वतु जिनमदिर
ते मेरुना शिखरने विषे चूलिकाना तलीयामां
रुक वन छे, तेमा चार दिशाये चार जिनभुवन
त्तिहांथी नीचे वली छत्रीश हजार योजन आवी
तेवारे मेखलाने विषे सौमनस्यवन छे, तेमा पण
र शाश्वता चैत्य छे ते सौमनस्य वनथी साडी ब

हजार योजन हेठल आवीयें, तेवारे त्रीजुं नंदनव
छे, तेमां पण चारे दिशायें चार जिनभुवन छे.
ते नंदनवनथी पांचशें योजन हेठें आवीयें, ति
समभूतल पृथ्वी छे, तेमां भद्रशाल वन छे, तेने
पण चार जिन प्रासाद छे, एम सर्व मली मेरु
ननी उपर सत्तर जिन प्रासाद छे.
मेरुनो पहेलो कांम हजार योजननो धरतीमां छे,
माटी, पाषाण, वज्ररत्न तथा कांकरानो छे, तेथी
पर बीजो सोमनस्य वन सुधी ६३००० योजननो
कांम ते स्फाटिक रत्न, अंक रत्न, रुपा तथा सोनानो
तेथी उपर छत्रीश हजार योजननो त्रीजो कांम
रक्तवर्णे कनकनो छे ॥ इति मेरु स्वरुपम् ॥

॥ अथ नरक वेदना वर्णन दोहा प्रारंभ. ॥

तिहां प्रथम कयी नरक पृथ्वी सुधी कया प्रका
रनी वेदना छे? ते संबंधी दोहा ॥

॥ पाप कर्मथी प्राणिया, उपज्या नरक मझार ॥ पर
देवामी परस्पर, वेदन क्षेत्र विचार ॥ १ ॥ त्रिहुं न
त्रण वेदना, बीजा त्रिकमां दोय ॥ सातमियें क्षे
त्रोहथी, क्षण एक सुख नहिं होय ॥ २ ॥ लाठी
र कोरडा, चाबक तणा प्रहार ॥ झकड पकड कर
बिने, दे मुग्दरनो मार ॥ ३ ॥ सांकले घाली साम
, मारे विविध प्रकार ॥ घोर अंधारे घालिया,
डिया करे पुकार ॥ ४ ॥

॥ अथ पहेला चित्रसबधी दोहा ॥

॥ तीक्ष्ण रौद्र परिणामथी, घणा जीव सहार ॥ वेर वांधीने ऊपना, नरक गतिने द्वार ॥ १ ॥ परमाधामी वेरियो, सांकलें घाल्यो सोय ॥ शस्त्र उघाडां तोलिने, मारण लागा तोय ॥ २ ॥ जीव हिंसा पापे करी, उपज्यो नरक मझार ॥ परमाधामी तेहने, हणवा करे होकार ॥ ३ ॥ जातां जाड जजेडता, चपल स्वभा वी जीव ॥ माथे मुग्गर पाडता, वहुली पाडे रीव ॥ ४ ॥ अनुचित कारज जे करे, तेहना एह हवाल ॥

॥ बीजा चित्रना दोहा ॥

राग तणा रसिया हुता, सुणि सुणि करता तान ॥ धर्मकथा नवि सांभली, तेहना कापे कान ॥ १ ॥

॥ त्रीजा चित्रना दोहा ॥

॥ पर रमणीना रूपनो, विषय वखाण्यो जोइ ॥ देव गुरु निरख्या नही, काढे आंख्यो दोइ ॥ २ ॥

॥ चोथा चित्रना दोहा ॥

॥ काची कलिया तोडता, न गण्यो रात ने दीह ॥ जाइ नरकमां ऊपना, काटे नाक अबीह ॥ १ ॥ रींगादिक वन जीवने, आहेडि पाड्या फद ॥ नाक विदारी नाथिया, तेहना करत निकंद ॥ २ ॥ सुरभी गध सूंघ्या घणा, गुच्छा फूल फराक ॥ अतर फुलेल पडाविया, छेदे तेहनु नाक ॥ ३ ॥

॥ पांचमा चित्रना दोहा ॥

॥ जूठ वचन बोल्यां घणां, कूड कपटनी खाण ॥
परमाधामी तेहनी, जीभ काढे जडताण ॥ १ ॥ एल
फैल मुख बोलता, किणरी न करे काण ॥ साचु क
हिय न बोलता, जीभ काढे जडताण ॥ २ ॥

॥ छठा चित्रना दोहा ॥

॥ घर घर नार जुता घणा, न कियो धर्म लगार ॥ अव
सर तो चित्यो नही, गळे धूसर सहे मार ॥१॥ गाडी र
थमां बेसिने, बलद दोडाव्या वाट ॥ अग्नि तपावी धोंस
रुं, देइ दोडावे घाट ॥२॥ वज्र कठोर सी रेतमां, दोडावे
देइ मार ॥ वहिल दोडाव्या वाटमां, तेहना एह प्रकार
॥३॥ लाकडी लेई मारता, घणां घणेरां ढोर ॥ परमा
धामी तेहने, बांधे जोडाजोड ॥४॥ पापी पाप पूरां क
र्यां,आव्यो अमारी पास ॥ खांधे धोसरुं मेलीने, मारे
साकल रास॥५॥खांधे सांकल मेलता, ऊपर मारे मार॥
पापी रथ खेड्या घणा, भोगव ड खनो चार ॥ ६ ॥

॥ सातमा चित्रना दोहा ॥

॥ रस्ते लूट्या रांकने,करी कोप अन्याय ॥ मांकड मा
र्या तेहने,पील्या घाणी मांय ॥१॥ काचां कवलां फल
भख्यां, गाजर मूला कद ॥ उंधे माथे नाखिने, पील्या
करे आक्रंद ॥२॥ गरिब जीवने मारता,करता बहु अ
न्याय ॥ जू लिख पण मारी घणी,पील्या घाणीमांय ३

॥ आठमा चित्रना दोहा ॥

॥ वनस्पति छेदन कर्यु,काप्या तरुवन राय ॥ वणा

मूलडा काढिया, कापे तेहनी काय ॥१॥ चटचट चूटे चामडी, त्रट त्रट त्रोडे मास ॥ तणखा कवे तन्नमा, जाणे मशिया मास ॥२॥ नाजी खोखा सेलरा, ज्यामे पडता जीव ॥ अणदीगं ते उरता, करे नरकमे रीव ३

॥ नवमा चित्रना दोहा ॥

॥ हलुवाई जवने विषे, कस्या पाप जे घोर ॥ परमा धामी तेहने, दे कडाइमा बोल ॥ १ ॥ कराइने न व जे कस्या, हिसा कर्म अघोर ॥ कुन्नीमां जइ ऊप ना, करता बूवारोल ॥ २ ॥ सत्यां धान्य नखा घ णां, तडके नाख्या जीव ॥ कुन्नीमांहे ऊपन्यो, पञ्यो करे ठे रीव ॥ ३ ॥ साहसिक थइने मारता, शश लाने वलि रोज ॥ कुन्नीमा जइ ऊपन्या, न मले खबर ने खोज ॥ ४ ॥ पापी पहोक उंला किया, शेक्या जी व विशेष ॥ कुन्नीमा जइ अवतस्या, उंमी पाडे चीश ॥ ५ ॥ कुन्नी लोह कादव तणी, बलतां गरका हो य ॥ यज्ञ होम कीधा घणा, तेहना फल ते जोय ॥ ॥ ६ ॥ लाच लूंच खाधी घणी, करता खोटा न्याय ॥ कुन्नीमांहे नाखिया, दे ठे बरठी धाय ॥ ७ ॥

॥ दशमा चित्रना दोहा ॥

॥ फूल जवारा तोडता, दसरा वेगण गोर ॥ काटा वीधे अंगमां, काइ न चाले जोर ॥१॥ फूल जवारा ढाकता, फूला सेज बिगाय ॥ सुख जोगविया तेहने, काटे चापे काय ॥ २ ॥ सूइया सहस्र तपाविने, तीखी अणीया तोर ॥ चांपे तेहना अगमा, करतो सोर बकोर ॥३॥

॥ अगीयारमा चित्रना दोहा ॥

॥ कोमल कलियां फूलनी, तोडी गूंथ्या हार ॥ सामली वृक्ष वांधिने, दे चावकनो मार ॥ १ ॥ हीमे घणाज दोडतां, तोड्यां तरुवर फूल ॥ वांध्या वृक्षज सामली, देखो ज्यांरा सूल ॥ २ ॥ जाजां जाड जजेरीयां, तोड्यां तरुवर पान ॥ बंधे मस्तक वांधीने, ताणे करे हेरान ॥ ३ ॥ कूट सामली मोटकूं, वांधे तरुवर माल ॥ तीखां जेहनां पानडां, जेसी खांडा धार ॥४॥

॥ वारमा चित्रना दोहा ॥

॥ मावापें सुत मोहथी, पोढो कीधो पोष ॥ नारी वशथी नीवड्यो, दु:खदायी ढम शोष ॥ १ ॥ गाती उपर लात दे, नांजे देई न्हार ॥ मात पिता गुण चोरते, सहेता कष्ट अपार ॥२॥ सुवरतणुं महोढुं कीयुं, दीया गातीरे पाय ॥ लातें करीने नेदता, निसरे किसे उपाय ॥ ३ ॥

॥ तेरमा चित्रना दोहा ॥

॥ फोल नरोंसा देश्ने, कपट कर्या घणी वार ॥ पर्वत पडता दुःख सहे, उपर तरवारांरी मार ॥ १ ॥ वचन चूक जे नर हुवे, माया कपटी जेह ॥ पटक पगाडी पर्वतें, खंम खंम करे देह ॥ २ ॥ जूगा सोगंद खावता, करता चुगली चाड ॥ जोरावर यमदूत ते, करत पगाड पगाड ॥ ३ ॥

॥ चौदमा चित्रना दोहा ॥

सामली तरुने गांयडे, पापी वेगे जाय ॥ पान

रूप शस्त्रज पडे, खण्ड खण्ड होय काय ॥ १ ॥ सासु वहु सतापती, करती कूड कपट्ट ॥ परमाधामी तेह ने, देवे दुःख दपट्ट ॥ २ ॥ करती चावत रागरा, घर घर जामा पाड ॥ कहेता लोक कलेशिणी, ते लहे दुःख अपार ॥ ३ ॥ नरकजमांथी नासतां, कूट सामली जाय ॥ ऊपरथी पडे पानडां, जाऐ माखा घाय ४

॥ पन्नरमा चित्रना दोहा ॥

॥ सासू वहु सतापती, दुख देती दिन रात ॥ जाइ नरकमा ऊपनी, ज्यांरि गतिपर लात ॥ १ ॥ शोक्य तणा सुत ऊपरे, धमकी द्वेप धरत ॥ पाटु प्रहारे आ हणी, ऊपर जार जरत ॥ २ ॥ लडती पीयर सास रे, देती सबल शराप ॥ कूडा कलक चढावती, अव गुण गाली आप ॥ ३ ॥ घात करे विश्वास दे, ठल करती ठक मांह ॥ निर्लज्ज नारी तेहने, देवे दुःख अथाह ॥ ४ ॥ अनुचित कारज जे करे, तेहना एह हवाल ॥ सांभजि धर्मज आदरे, पामे सुख्क रसाल ॥ ५ ॥ लडती पीयर सासरे, करती क्लेश कुरूप ॥ वातें वात चलावती, जिण जूजू दीसे रूप ॥ ६ ॥

॥ शोलमा चित्रना दोहा ॥

॥ कूहाडे करि कापियां, लीलां महोटा झाड ॥ पर माधामी तेहनु, मस्तक छेदे फाड ॥ १ ॥ कोश को दाली पावडा, भूमि विदारण जेह ॥ पृथ्वी काय आ रभथी, पामे कष्ट अछेह ॥ २ ॥

॥ सत्तरमा चित्रना दोहा ॥

॥ जातां जाड जजेरता, चपलस्वभावी जीव ॥ माथे फरसी पाडतां, वहुली पाडे रीव ॥ १ ॥ खेत्रमांहे जातां थका, जाळां कापतां झाड ॥ परमाधामी तेह ने, मारे फरसी मार ॥ २ ॥

॥ अढारमा चित्रना दोहा ॥

॥ पूज्य कही पूजावतो, करतो अनरथ मूल ॥ कामण करि गर्भ गलावतो, तेहने प्रोयुं त्रिशूल ॥ १ ॥ गुरुद्रोही चेलो हुवे, वेष विराधक जेह ॥ मारगलोपी मत्तियो, पामे दुःख अछेह ॥ २ ॥ मानवनो भव पामिने, हणिया जलचर जीव ॥ दया न आणी दिलमां, करतो पाप सदीव ॥ ३ ॥ निलंछण कर्म कियां घणां, पाप कर्या अति जेह ॥ परमाधामी तेहने, शूलें परोइ देय ॥ ४ ॥ अग्नि आरम्भ कीया घणा, कीधा हिंसा धर्म ॥ ते त्रिशूलें उगालीया, देखो आयां कर्म ॥ ५ ॥ कुसगति कीधी घणी, जेह सेवी परनार ॥ उंधे शूले परोइया, दे वलि ऊपर मार ॥ ६ ॥

॥ उंगणीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ पाप प्रभावथी ऊपनो, कुंभीपाकनी मांय ॥ ऊपर चूंटे कागडा, मांहे कीडा खाय ॥ १ ॥ ऊपर चूंटे कागडा, त्रट त्रट त्रूटे काय ॥ कुंभीमांहि पड्यो थको, सहेतो दुःख अपाय ॥ २ ॥

॥ वीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ चोरि करीनें पारकी, लेता धननी राश ॥ अथ डावे आंधा करी, दे दे बहुला त्रास ॥ १ ॥ धर्मी थ इने धूतिया,करी ठगाई तूर ॥ परमाधामी तेहने, देता कष्ट करूर ॥ २ ॥ पापें पेशो मेलता, घणा किया आक्रंद ॥ जाइ नरकमें कपनो, वरका पाडे अंध ॥३॥

॥ एकवीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ वैर विठोहां पाडियां, जूंव्यां फसावी वाल ॥ चक्र नमाडी वरठीयें,पटक पछाडे काल ॥ १ ॥ गलां मर डी घरेणा लीया, बालहत्या करि एम ॥ पटके वरठी परोइने,फेरवे फररा जेम ॥ २ ॥ कीया निलंछन ढोर ने, मान्या ताणी बाध ॥ गगडावी गिरि कपरें, काढे तेहनी सांध ॥ ३ ॥ हालि तणा नवने विषे, फाड्यां धरती पेट ॥ परमाधामी तेहने,मारे वरठी नेट ॥ ४ ॥

॥ बावीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ होको पीता होंशशुं, ढोल्या अणगल नीर ॥ ता तू त्रातू पावता, कठे बहुली पीर ॥ १ ॥ हिसा धर्मज आदर्यो, लागा कुकर्म केड ॥ परमाधामी तेहने, मु खमें सीसु रेड ॥ २ ॥ हणिया हुक्का पीवतां, अग्नि जलादिक जीव ॥ तातुं लोह तपावीने, मुख चाव्या करे रीव ॥ ३ ॥ करि अगार अग्नि तणा, चलम न री चकमोल ॥ गांजा तमाकु जे पिये, पामे न रकनी पोल ॥ ४ ॥

॥ त्रेवीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ सम सोगंद लइ नांजिया,सेव्यां व्यसनज वार ॥
लाल चोल गोलो करी, चांपे मुखमें फार ॥ १ ॥ क
पर मुग्गर मारतां, मूके मह्टोटी पोक ॥ करतां किम
चेत्यो नही, एम कहे यम लोक ॥ २ ॥ चोथुं व्रतज
आदरी, कियो शीलनो खंम ॥ परमाधामी तेहने.
मारे मुग्गर दंम ॥ ३ ॥ एवा व्यसनने सेवतां, पामे
एह हवाल ॥ ४ ॥

॥ चोवीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ दगा झोह करि दंमिया, राज हुकुम मद छोत ॥
जई नरकमां ऊपन्यो, माथे धरी करोत ॥ १ ॥ अग्नि
तपावी धरतियें, ऊर्ध्वं बेसाडी धार ॥ वे जण ताणे
ताकिने, पापी करत पुकार ॥ २ ॥

॥ पच्चीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ अनाचार अति सेवतो, करतो घणा अन्याय ॥
वज्र तणा कांटा करी, वींधण लागा पाय ॥ १॥ गल
के फांसी दोरडे,दोडावे देइ मार ॥ हिंमतो हेठे पडे,
पगनी पीड अपार ॥२॥ धरती धूंखी अग्नि ज्यु, ती
खी करवत धार ॥ तिण ऊपरज चढावता, करतो बहु
पोकार ॥ ३ ॥ साधुने संतापतां, वचन कह्यां अति
घोर ॥ परमाधामी तेहनें, फांसी देई मोर ॥ ४ ॥

छवीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ कलाल थइने काढीयां, दारु नही दाह ॥ पापार

नथी पामियैं, नरक निवासकी ग्रंद ॥ १ ॥ रुधिर रूप मदिरा करी, प्यालो अग्नि तपाय ॥ मुख फाडी ने पावता,वेदन सही न जाय ॥ २ ॥ मद्य पीधु मा नव नवे, ठक्या रहेज ठयल्ल ॥ तरवो पावे लाल करी, तोहि न बूटे गयल्ल ॥ ३ ॥

॥ सत्तावीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ निज नारीने परिहरि,पर रमणीसे जार॥ सूलां केरे सायरे, घसे पाय सनार ॥१॥ ज्यु ज्यु सूला ख न खन्ने,त्यु त्यु करे पुकार ॥ परमाधामी बोलिया,ता हारा कृत्य सनार ॥ २ ॥ पेखी पराइ गोरडी, जे अ नुराग धरत ॥ सूके हाडे श्वान जिम, लालें पेट न रत ॥ ३ ॥ हिंसा करिने फूजता, जाणे जाइ मोक्ष ॥ जेहने हिंसक गुरु मल्या, पहोच्या नरकें गोक्ष ॥४॥ जे गुरु लोभी लपटी, तेहनां मान्या वेण ॥ जाइ नरक मां ऊपना, वीशामो नहि क्षेण ॥ ५ ॥ कोश पावड कीया घणा, ढोल्यां अणगल नीर ॥ परमाधामी तेहने, पग पकडीने चीर ॥ ६ ॥

॥ अठावीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ सूस लईने भांजिया, नालोया गुरुपास ॥ जई नरकमा ऊपन्या, खम्ड खम्ड कस्या तास ॥ १ ॥ विष दइ माणस मारिया, करि करि क्रोध प्रचम्ड ॥ परमाधामी तेहनो, देह करे शतखम्ड ॥ २ ॥

॥ ओगणत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ साधू जन संतापिया, निंदा कीधि अपार ॥ ताते थंभें वांधिने, दे मुगरनी मार ॥ १ ॥ थांनो देखी थरहरे, कपण लागे देह ॥ हा हा मुज वालो रखे, कदी न करशुं तेह २

॥ त्रीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ चार स्नान कीयां नही, अंतर्गत मन लाय ॥ अणगल पाणी ढोलियां, पड्या नरकमां जाय ॥ १ ॥ जल ढोलीने जीमता, दया न कीधी कांय ॥ जलावे अग्नि जालमां, पकड पापीना पाय ॥ २ ॥ साधु तणी निंदा करी, पूंठे दीधी गाल ॥ उधे मस्तक तेहने, बाले अग्नी जाल ॥ ३ ॥ मधु पूडा पाड्या घणा, लोभ लौ जने काज ॥ माखी चूटे तेहने, हइये कीधी दाज ॥ ४ ॥ डूंगर दव घाल्या घणा, बाल्या वनचर जेह ॥ परमाधामी तेहनी, बाले अग्नी देह ॥ ५ ॥

॥ एकत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ जलचर जीव विराधिया, हिंसा न गणी कांय ॥ परमाधामी पटकता, नदि वैतरणी मांय ॥ १ ॥ न्हावण धोवण बहु कियां, ढोल्यां अणगल नीर ॥ फबकी मारी झोलियां, नदी सरोवर तीर ॥ २ ॥ नदी वैतरणी नीरनुं, देखो दुष्ट स्वरूप ॥ रसी रुधिर ने पाचनो, कलकलतो दह कूप ॥ ३ ॥ बहु दुर्गंधी देखिने, आवे कांठे धाय ॥ नाखे पाछो साहिने, परमाधामी पाय ॥ ४ ॥ मोची नवमे जे कह्या, मार्या चरता जीव ॥ वैतरणीमां नाखिया, घणी करावे रीव ॥ ५ ॥ बलतुं

मुखथी इम कहे, नहि वांक हमारो लगार ॥ उवें म
स्तके बांधिने, ऊपर दे वलि मार ॥६॥

॥ बत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

वेश्या विषय विकारथी, अति सेवी अनाचार ॥ जइ न
रकमां ऊपनी, सहेती कष्ट अपार ॥१॥ धूर्त्तपणें धन ले
इने, वली न जूवे वाट ॥ ह्राव भाव नित हेलवी, मेलवि
नेह निराट ॥२॥ वेश्या हुइ माया करी, सुख विलसे
ससार ॥ जई नरकमां ऊपनी, घणो सहे यम मार ३

॥ तेत्रिशमा चित्रना दोहा ॥

॥ इष्ट पिंम कर मोहियो, सग कियो परनार ॥ अ
ग्नि तपावी पूतली, उंढे गाती वार ॥ १ ॥ वलुं वलु
महाराजजी, मत थो महोटो त्रास ॥ छोडो फासो क
ठनो, जिम लेउं थोडो श्वास ॥ २ ॥ परनारी जो तू
टो नही, तो लागे महोटो दाग ॥ परनारीने परिहरो,
उपर वडारी आग ॥ ३ ॥ राजा दंडे लोक भंडे, न
रकें होय फजेत ॥ जिणने चढो वारमो, तिने परना
रीशुं प्रीत ॥ ४ ॥ परनारीना नेहथी, पाणी उतरी
जाय ॥ थोडा सुखने कारणे, मार अनंतो खाय ॥
॥ ५ ॥ घरहाणी हासी घणी, सुखे न सूवे आय ॥
जिणने चढो वारमो, परनारी घर जाय ॥ ६ ॥

॥ चोत्रिशमा चित्रना दोहा ॥

कूड कपट करि उलवी, परयापण धनराश ॥ देइ विश्वा
सने वंचिया, सहे नरकमा त्रास ॥१॥ हिंसा धर्मज आद
री, हाथे चूक्या जत ॥ जई नरकमे ऊपन्या, देखो इणरातत

॥ पांत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ दान देतां जे वारता, करता राग ने द्वेष ॥ पर माधामी तेहने, मुखमां मारे मेख ॥ १ ॥

॥ छत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ वस्तु वेचण आपियां, गाडां पोठी ऊंट ॥ साह कहीने तोलतां, चहुटे मांभी लूंट ॥ १ ॥ एंधाण प रां जे मारता, देता धडी चडाय ॥ कूडां खत्त वणाव ता, पहोता नरक बुडाय ॥ २ ॥ धगी धगी शु विण जता, लेण देणरा डंर ॥ किया पसारा पापना, क्यूं करि बूटे फोर ॥ ३ ॥ ताकी तीर कटारियां, आमा सामी खाय ॥ पाप कियां जव पाछलें, कोण छुडावे आय ॥ ४ ॥ पूरव वयर संबंधथी, करे परस्पर घात ॥ शस्त्र झटो झट मारता, रुपें जिस्या किरात ॥ ५ ॥ पा पी पारानी परे, मली मलीने जाय ॥ करडां वचन कही घणां, ऊपर मेले घाय ॥ ६ ॥

॥ साडत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ घेरैया होली तणा, हसता पाणी ढोल ॥ परमा धामी बोलिया, घणी उडावो रोल ॥१॥ तरुआ तेल उकालिने, आणी कोप अपार ॥ पिचकारी नरि छांटिने, ऊपर छांटे खार ॥२॥ उंडे पाणी माछली, तरफड कर ती तेह ॥ नरडो लचीने फेकतां, दाझे त्यांरी देह ॥३॥ परमाधामी आगथी, तेल तप्त करेह ॥ नरि पिचकारी तेहने, छांटे वेदन अछेह ॥४॥ आवो रे वड घेरिया, पा प करम हुशियार ॥ छांट्यो ताता तेलशुं, ऊपर लगाव्यो

खार ॥ ५ ॥ माय सुणे नगिनी सुणे, सुणे वलि लोक बजार ॥ गावे उघाडी गाळियां, लाजे नहि य लगार ॥ ६ ॥ होळी कलहनु मूल छे, लाज हीण नर थाय॥ बालकतो उरे रहे, पण अकल बुढानी जाय ॥ ७ ॥

॥ आडत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ हरण शशा ने बोकडा, करता मननी लहेर ॥ गरिब जीवांरे मारता, ज्यारे लाग्यो पाछो वेर ॥ १ ॥ लिया शिकारा साकडा, माचा भरता मक ॥ कृण जीवितने कारणे, कोण लगाया लक ॥ २ ॥ सिह शिकार कीया घणा, वाध्या वयर अथाग ॥ पाप करमथी पामियो, नरक निगोदकि जाग ॥ ३ ॥ परमाधामी वाघना, रूप करी विकराल ॥ मसता माचा फाडिने, सकट सबल विशाल ॥ ४ ॥ सिह तणे नव सावजा, माया वनचर जीव ॥ हिसक भवमे हिसिया, ते करता बहु रीव ॥ ५ ॥

॥ उंगणचालीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ तु तो हतो शीकारी, कीनी बहोत खुवारी ॥ कर कर जीवारी घात, पडियो नरक विख्यात ॥ १ ॥ इणरो मांस वढावो रे, सूळा करने खवावो रे ॥ तरवो कर कर लाल, पकड पापीने पावो रे ॥ २ ॥

॥ चालीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ धोबीने भव धोइया, वारु वस्तर वेश ॥ जलचर जीव विणाशिया, अणगल नीर अशेष ॥ १ ॥ नरकवास प्रभावथी, नरकावास सीमाड ॥ फरुड पक

ड यमदूत ते, करत पछाड पछाड ॥ २ ॥ धोवी क पडा धोवाडे रे, शिला उपर पछाडे रे ॥ त्युं परमाधा मी पग पकडी, पापीने पछाडे रे ॥ ३ ॥ अवे तो म त मारो रे, मां गरिबने तारो रे ॥ वारवार कहुं तुम आगें रे, प्रभु तोछुं विनती मागे रे ॥ ४ ॥ तव वो ले यमराया रे, पाप कीनां सवाया रे ॥ तुं नरक तणां डुःख देखी रे, महोढां क्युं विलखायां रे ॥५॥ दिलमां दया न आणी रे, पाप करी मोजां माणी रे ॥ तुं नरकमां पडियो रे, परभवनी चिता न जाणी रे ॥ ६ ॥ परने धासको पाडतां, करि करि चाडी क्रूर ॥ गेवी शिला उपरे, भांजि कस्यो चकचूर ॥ ७ ॥ प छर ऊपर पटकियो, तूटे लोही धार ॥ कागा चूंटे ते हने, धोवीनो अवतार ॥ ८ ॥ चक्षु परस्त्री देख तां, रूडां मागां रूप ॥ शिला तलें ते चांपिया, भार दई भरपूर ॥ ए ॥

॥ एकतालीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ मद्यमांस भक्षण विपाक दोहा ॥ पशु जीव मरा या रे, मधु मांस तें खाया रे ॥ ते कर्म उदयें आया रे, क्यु रोवे पापी पराया रे ॥ १ ॥ तव वोले कर जोडी रे, अव द्यो मोकुं छोडी रे ॥ नरभवमें जाछुं रे, श्रीजिनधर्म आदरछु रे ॥ २ ॥ कीयो उपकार न वि सारछु रे, तव ते तटकी वोल्या रे ॥ चुपको रहे मो हत्या रे ॥ नरनो भव पायो रे, तें तो मुंही गमायो रे ॥ ३ ॥ धायो रोट्यांछुं जद विसर गयो रे ॥ वेस

वे गणरा नडीता रे, कीधा विण नही सरता रे ॥
ते तो हरि न त्यागी रे, खावाने लय लागी रे ॥ ४ ॥
इणरी खाल उतारो रे, ऊपर खार सचारो रे ॥ हवे
मांफी मोघर मुशला रे, वींधो एने त्रिशूलां रे ॥ ६ ॥
मार मार त्यां करता रे, हीये रोष वहु धरता रे ॥ त्यारे
धड धड लागो पापी धूजवा रे,कस्या पाप करमने बूझ
वा रे ॥७॥ ठीपाना नवने विषे,कीधा रगण पास ॥ प
रमाधामी तेहने, घणो पमाडे त्रास ॥ ८ ॥

॥ वेहेंतालिशमा चित्रना दोहा ॥

॥ हणे जीवने घणे प्रकारे रे,एने परमाधामी वकारे
रे ॥ वैक्रिय लब्धे बनाया रे, दोव्दु लंक लगाया रे ॥ १ ॥
ढिंक होय भकाला रे, भूख तृष्णा अकाला रे ॥ तोडे
पापीने आय रे, लांबी चांच बनाय रे ॥ २ ॥

॥ त्रेंतालिशमा चित्रना दोहा ॥

॥ पखी पाळ्या पालमां, तेतर मोर चकोर ॥ जई
नरकमां ऊपन्यो, खमतो कष्ट कठोर ॥ १ ॥ क्रो क्रो
करता कागडा, त्रट त्रट तोडी खाय ॥ परमाधामी
पापिने, धमकी चारें धाय ॥ २ ॥ नीच तणे नव ना
खिया, नदी सरोवर जाल ॥ दया न आणी दिलमां,
पहोतो नरक विचाल ॥ ३॥ तीखी चाचा तुंमनी, क
रडे करि करि कोप ॥ वलग्या गृध्रज पखिया, उत्कृष्ट
रचिश्रा टोप ॥ ४ ॥ फणाटोप करि क्रोधसे, देवे मंक
प्रहार ॥ भीम भयकर नरकमा, नाखे नरक मफार

॥५॥ काग करे कूराली रे, बोले बोल विकराली रे ॥ उड उड बांहिं चांचे रे, नाखे देह विदारे टांचे रे ॥६॥ अंगोपांगे वलग्या रे, चांचतणा देइ तणका रे ॥ वेदन वहुली थाय रे, थर थर कंपे काय रे ॥ ७ ॥

॥ चुमालिशमा चित्रना दोहा ॥

॥ स्यर होय रूआला रे, कालाने विकराला रे ॥ फाडे पापीने आय रे, करि करि तुंम उजाला रे ॥१॥ ताती वेलु धख धखे, ते मांहे नाखे वाय ॥ परमाधामी तेहना, काटे दोनुं हाय ॥ २ ॥ स्वर सावर बोकडा, हरिणादिकना जीव ॥ मसलां मार्यां अ होनिशें, करतो पाप सदीव ॥ ३ ॥ परमाधामी तेह ने, करि स्वरनां रूप ॥ हणता हर्पे धरी घणो, करि बहु क्रोध कुरूप ॥ ४ ॥

॥ पिस्तालीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ घणा दोडाव्यां घोडलां,मार्यां बरछी वाण ॥ करे शिकारा सामटी, न गणी धर्मनी काण ॥ १ ॥ पीले वरणे सोनेरी रे, कालि लीक कल केरी रे ॥ करी वाघ नां रूप रे, शार्दूल केसरी विरूप रे ॥ २ ॥ पाप कर्म थी प्राणिया, मरी नरकमां जाय ॥ परमाधामी वाघ नां,रूप करीने खाय ॥ ३ ॥ उछलता चोकाला रे, गाज करे असराला रे ॥ अब करो कोइ वाहारां रे, पापीने पकड पछारां रे ॥ ४ ॥ वखता पर सागारे, मतवाला लागा रे ॥ ज्युं परमाधामी डुःख दायक,दोड आए वलगा रे ॥ ५ ॥ दिन दसरा चूख्या रे, जाणे

खायणने ठुक्या रे ॥ अब कोइ आय छुडावो रे,पक्ष्यो कूकुआ करे पीडावो रे ॥ ६ ॥ अब नहि तोहि ठोड रे, करे लाम ने कोड रे ॥ परवश पडियो आय रे, मारे होडा होड धाय रे ॥७॥ मांस मछर माखा घणा, केनी न मानी वात ॥ जइ उपजे ते नरकमां, घणुं पामे छे त्रास ॥ ८ ॥

॥ छेंतालिशमा चित्रना दोहा ॥

॥ सिंह शिकार किया घणा,वांध्या वैर अथाग ॥ पाप करीने ऊपन्या,नरकमांहे दुःख लाग ॥ १ ॥ पर माधामी वाघना, रूप करी विकराल ॥ अगोपांगे वेद ना, सहे जीव बहु वेदना ॥ २ ॥

॥ सुडतालीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ मार देवे यमराया रे,तपे तेजें सवाया रे॥ करी वैक्रिय सरुप, चित्ता सरप लगाया रे ॥ १ ॥ तव क रे हाय हाय रे, तोडण लागा काय रे ॥ मुने सुख नहीं काइ रे, दुःख दीये छे घणा आंइ रे ॥ २ ॥ क्युं कर होशे सुख रे, पर जीवने दीधुं दुःख रे ॥ तें तो ध र्म न कीधो रे, श्रीजगनाथनो रे ॥ ३ ॥ अब क्यु क र रोवे रे, कीधा कर्म न जोवे रे ॥ अब दीन पणु क्युं नाखे रे, पापी जीवडा रे ॥ ४ ॥ करतो महारो म हारो रे, कुटुंवनें परिवारो रे ॥ अब तो किणरो को नहीं रे, नही कोइ ताहरो रे ॥ ५ ॥ मुसलमान तणे नवे, माखा चीढी साप ॥ पाप कर्मथी पामियो, नर क कष्ट महा ताप ॥ ६ ॥ फणा टोप करि क्रोधमा, दे

वे दंख प्रहार ॥ नीम नयंकर नरकमां, नाखे नरक मझार ॥ ७ ॥ सात व्यसनने सेवता, करता महोटां पाप ॥ जई नरकमां ऊपन्या, तेहनें वींट्या साप ॥ ॥ ८ ॥ मात पिताने पीडतो, करतो ऊगडा आप ॥ जई नरकमां ऊपन्यो, वींटी वलगा साप ॥ ए ॥

॥ अडतालीशमा चित्रना दोहा ॥

॥ आप कुटुंबने कारणें,कस्या कोडि आरन्न ॥ माया अतिही फेलवी, रोप्यो पापनो थंन ॥ १ ॥ कर्म अशुन नारे करी, जीव अधोगति जाय, छेदन नेदन बहु सहे, कोइ सहाय न थाय ॥ २ ॥

॥ उंगणपचाशमा चित्रना दोहा ॥

॥ पीछें पछतावो करे,कुमति मलीया आय ॥ खोटे गेले घालियो, जूव्यो वस्ती मांय ॥ १ ॥ मांहोमां हैं लडाविया, करि हाकोटा हाक ॥ गगडाव्या मीठा मलग, सांम परे वाताक ॥ २ ॥

॥ पचाशमा चित्रना दोहा

॥ हाय मे पापी शुं कस्युं,हास्यो मनुषा देह ॥ आडा कोइ न आविया, करता घणो सनेह ॥ १ ॥

॥ एकावनमा चित्रना दोहा ॥

॥ अहोनिश पर निंदा करे, धर्मवचन न सुहाय ॥ पर परिवादना योगथी, मरी नरकमां जाय ॥ १ ॥ परमाधामी तेहने, वेदना करे अपार ॥ अहि वींछी वलगाडिने, दिये वलि ऊपर मार ॥ २ ॥ अणदीठी

अण सांजली, करे पराई वात ॥ आप पिंम पापे न
रे, ते चमाल कहात ॥ ३ ॥ अतुली वल निंदा तणुं,
लाग्यु व्यसन अछेह ॥ शेठ तणी पुत्री परे, पामे अ
नरथ तेह ॥ ४ ॥ गाडा गूगा छेदतो, मास्या गरिवा
रक ॥ जई नरकमां ऊपन्या, तोडी खाये मरू ॥ ५ ॥
चाडी खाधी चोतरे, करत घणेरां पाप ॥ जई नरकमा
ऊपन्या, काटे वींछू साप ॥ ६ ॥

॥ बावनमा चित्रना दोहा ॥

॥ मन मेलो मीठो मुखे, कूड कपटनो कोश ॥ पाप
करम पोतें करी, परना काढे दोष ॥ १ ॥ डुर्जन सज्ज
न थइ मले, बोले मधुरी वाण ॥ डुर्जन कुटिलाई प
णु, नवी तजे करे हाण ॥ २ ॥ पाप अढारे सेवतो,
पहोतो नरक मजार ॥ परमाधामी वेदना, करे कटा
री मार ॥ ३ ॥ नीच्यो घाली वायमा, आणी क्रोध
कठोर ॥ कुटिल कटारी मारता, कांइ न चाले जोर ॥ ४ ॥

॥ त्रेपनमा चित्रना दोहा ॥

॥ छत्रिश प्रकारे रसवती, निपजावे हुशियार ॥ शा
क पाक बहु सालणां, नित आरोगे सार ॥ १ ॥ जी
भ तणा रसिया थका, न करे धर्म लगार ॥ भक्षाभ
क्ष न ओलखे, माने धन अवतार ॥ २ ॥ पोतानो
पिंम पोषियो, न दियु सुपात्रें दान ॥ रस गारव करि
राचियो, माच्यो मन धरि मान ॥ ३ ॥ हसता खा
धा होंशथी, कंद मूल पशु मास ॥ भोजन कीधां रा

त्रिनां, न गण्यो दोष रसांस ॥ ४ ॥ ठेदी कुमली काकडी, खायां नक्त अनक्त ॥ परमाधामी तेह्ने, देवे बहुलां दुःख ॥ ५ ॥ पाप सेवि नरकें गयो, अशरण थयो अनाथ ॥ परमाधामी तेह्ने, दुर्गंध कवल दें हाथ ॥ ६ ॥

॥ चोपनमा चित्रना दोहा ॥

॥ मेणा माठी मेयडा, कोलि वाघरी जेह् ॥ श्वान शिकार दोडाविने, जीव हणाव्या तेह् ॥ १ ॥ ताकी मार्यां तीरडां, विविध वनेचर जीव ॥ हत्या करिने ऊपन्यो, नरकें करतो रीव ॥ २ ॥ परमाधामी श्वाननां, रूप करी विकराल ॥ मसता मांचां फाडिनें, तडफडता ततकाल ॥ ३ ॥ पूरव पाप प्रभावथी, करता सोर बकोर ॥ परवश पडिया बापडा, खमता कष्ट कठोर ॥ ४ ॥ पाप करीने फूलता, लगार न आणी लाज ॥ परमाधामी तेह्ने, करता तीरज मार ॥ ॥ ५ ॥ चाटें जाड जंजेरता, घणाने करता पीड ॥ परमाधामी तेह्ने, ताकी मारे तीर ॥ ६ ॥ ताकी देता तीरडां, तडफड मरता जीव ॥ चलव्या ते पाप दलमां, शोचे फूरे सदीव ॥ ७ ॥

॥ इति नरकवेदनावर्णन दोहा समाप्त ॥

अथ लोक स्वरूप वर्णन –

आ चित्र, मनुष्यने आकारें छे, ते चौदराज लो कनुं छे, ते जेवारे स्त्री छास वलोवे छे, तेवारे बे पग मोकला राखे छे अने बे हाथ कटि प्रदेशने विषे राखे छे, तेथी बे कोणीना वचला भागमा कटी प्रदेशथी हृदयसुधी चढतो विस्तार थाय छे अने वली उपर ली मस्तक दिशी तरफ तो संकीर्णता छे

तेम लोक पण नीचे तलीयामां सातमी नरक पृथ्वीये पहोलो छे पछी चढतो चढतो मध्य भागे पहेली नरक पृथ्वी तथा तीर्छा लोकने विषे साकडो छे अने मध्य भागथी वली उपर चढतां क्रमे क्रमे पांचमा देवलोक सुधी कोणीने स्थानकें विस्तार पामेलो छे तिहांथी वली सकीर्ण थाय छे माटे छाशव लोवनारी स्त्रीने आकारे कह्यो छे ए लोक, धर्मास्ति काय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्ति काय, जीवास्तिकाय अने काल, ए छ द्रव्यें करी प रिपूर्ण भरेलो छे अथवा प्रकारातरें महोटा सराव लानी उपर न्हाना सरावालानो सपुट कर्यो होय तेना सद्दश लोकनो आकार छे

ए लोक पगना तलीयाने स्थानके चारे दिशिये सातराज प्रमाण पहोलो छे त्यांथी प्रदेशनी हाणी करता मध्यभागे नाभिने स्थानके आवीयें तेवारे तिर्य ग्लोकना पृथ्वीतलने विषे चारे दिशिये एक राज प्र माण पहोलो छे त्याथी वली उपर जातां प्रदेशनी

वृद्धि करतां ज्यां वच्चे हाथनी कोणीने स्थानकें पांचमो ब्रह्म नामे देवलोक छे, त्यां चारे दिशियें पांच राज प्रमाण पहोलो छे, अने त्यांथी वली प्रदेश घटता छे ते मस्तकने स्थानके चारेदिशिये एक राज प्रमाण पहोलो छे, तथा नीचेनी माघवती नामा सातमी नरक पृथ्वीना तलाथी मांमीने यावत् उपरनी सिद्धशिला सुधी चौदराज प्रमाण उंचो छे,

माघवती नामें सातमी नरक पृथ्वीना तलामां चारे दिशिने विषे ए लोक सात राज प्रमाण पहोलो छे, त्यांथी प्रदेशनी हाणी करतां छठी साडा छ राज प्रमाण पहोली छे, पांचमी छ राज प्रमाण, चोथी पांच राज प्रमाण, त्रीजी चार राज प्रमाण, बीजी अढी राज प्रमाण अने पहेली घम्मा नामे नरक पृथ्वी एक राज प्रमाण पहोली छे ए प्रमाण लोक नाल बत्रीश ग्रंथने अनुसारे लख्युं छे. वली ग्रथांतरें तो अन्य प्रकारे पण दीठामां आवे छे, माटे निश्चयनी वात ज्ञानी जाणे

तथा लोकनो मध्य नाल वचलो भाग चारे दिशियें एक राज प्रमाणना पोहोलाण वालो तेमां सर्व बे इन्द्रियादिक त्रस जीव जन्म मरण पामे छे, माटें ते त्रस नाडी उन्ची चौदराजलोकनी उंची कहेवाय छे. अने ते त्रस नाडीथी बाहेर जे लोकनो विस्तार छे तेमां तो सर्वत्र सूक्ष्म एकेंद्रिय निगोद व्यापी रह्यो छे,

मेरुना रुचक प्रदेशथी असंख्यात योजननी कोडी नीचे जश्ये तेवारे पहेली नरक पृथ्वीने विषे लोक नो मध्य भाग जाणवो मेरुपासे समभूतल पृथ्वीथी नवशे योजन उपर अने नवशे योजन हेठल मली अढारशें योजन प्रमाण तिर्यक लोक छे, तेने विषे असख्याता द्वीप समुद्र छे तेमा व्यतरदेवो, मनुष्य, तिर्यंच, ज्योतिषी, वनस्पतिकाय, अग्निकाय आदिक जीवो वसे छे तेमज अनेक नगर, मेरुपर्वतादिक प दोर्थोना समूह छे असख्याता द्वीप मध्ये पण मनुष्यनी वस्ति मात्र अढीद्वीप पीस्तालीश लाख योजन प्रमाणमांज छे, ते वात अढीद्वीपना नकशापासे एज ग्रथमां सक्षेपथी लखाणी छे

आधोलोके एकेक राज प्रमाण एकेकी नरक पृथ्वी छे तिहा पहेली नरक पृथ्वीमां भवनपति देव तथा व्यतर देवो पण रहे छे तथापि नारकी घणा छे, माटे अधोलोके तेमनो वास कह्यो छे

हवे ऊर्ध्व लोकनी वात कहे छे लोकना मध्यथी सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोक दोढराज उंचा छे, अने सनत्कुमार तथा माहेन्द्र देवलोक अढीराज उंचा छे तथा ब्रह्म, लातक शुक्र अने सहस्त्रार ए चार देवलोक चार राज उंचा छे, तथा आनत, प्राणत, आरण्य अने अच्युत, ए चार देवलोक पाच राज उंचा छे तथा नव ग्रैवेयक छ राज उंचा छे अने पांच अनुत्तर विमान सात राज उंचा छे तिहां अतना

खांम्वाना-ठेकेडाने विषे सिद्धशिला छे इत्यादि लोक संबंधि घणी वातो छे ते ग्रंथांतरथी जाणवी इहां तो संक्षेप मात्रथी लखी छे

वस्तुपाल तेजपाल मंत्रीश्वरे जे जे धर्मकार्य कर्यां छे, तेनुं संक्षेप वर्णन विक्रम संवत् १२९० ना वर्षमां एक पंमितें लखेलुं छे ते नीचे प्रमाणें लखीयें छैये.

१३०० तेरशें श्रीजिनप्रासाद शिखरबंध कर्यां
३२०२ त्रण हजार बशें ने बे जिनप्रासादनो जीर्णोद्धार कराव्यो.
२३०० बे हजार ने त्रणशें महेश्वरनां प्रासाद कराव्यां
१०५००० एक लाख ने पांच हजार नवीन जिनबिंब भराव्यां.
१००००० एक लाख महेश्वरनां लिंग स्थाप्यां
८४ चोराशी पाषाणबद्ध सरोवर कराव्यां
९८४ नवशें ने चोराशी पोषधशाला करावी
८८२ आठशें ने ब्याशी वेदशाला करावी
७०१ तपस्वीयोने रहेवा सारु सातशो ने एक मठ कराव्या
४०० चारशें पाणीनां पर्व कराव्यां
३६०००००० छत्रीश लाख द्रव्य खरचीने ज्ञानना भंमारा कराव्या

३०००००० त्रण लाख द्रव्य खरचीने खंभायत
मां ज्ञानभंडार कराव्या
१८७६००००० अढार क्रोडने छन्नु लाख द्रव्य शत्रुं
जय तीर्थने विषे खरच्यु
१८८३००००० अढार क्रोड ने त्र्याशी लाख द्रव्यनो
श्रीगिरनार तीर्थ व्यय कीधो
१२५३००००० बार क्रोड ने त्रेपन लाख द्रव्य श्री
आबुतीर्थ खरच्यु
संवत् १२८६ ना वर्षे आबुये पायो
नाख्यो ते संवत् १२९२ ना वर्षमां
आबुयें ध्वजा चढावी
५०० पाचशें सिंहासन हाथीदांतना करा०
५०५ पांचशे ने पांच समवसरण कराव्यां
७०० सातशें नीशाल जणवा माटे करावी
७०० सातशें धर्मशाला करावी
७०० सातशें सत्रुकार मंमाव्या, एटले
सदाव्रत कराव्या
५०० पांचशें ब्राह्मण चार वेदना जाण
नित्यप्रत्यें वेद जणता हता वर्ष
प्रत्यें त्रण वार संघ पूजा साहामी
वात्सल्य करता हता
१००० एक हजार कापडी दिन प्रत्ये दान
शालायें आहार लेता हता
१२॥ साडीबार यात्रा श्रीशत्रुंजयनी

२१ एकवीश आचार्योने पदस्थापना करी
१००० एक हजार सिंहासन महात्माने आहार आपवा निमित्ते कराव्यां.
३५०० त्रण हजार ने पांचशें तपोधन गच्छ सन्यासीनी स्थापना करी
१००० एक हजार सघ पूजा करावी
१८०० अढारशें साधुउं एकला महात्मा नित्य आहार वोहोरता
८४ चोराशी मसीत तुरक लोकोनी करावी
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरची श्रीशत्रुंजये तोरण बंधाव्युं
४०० चारशें वरकन्या परणाव्यां
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरची हजे तोरण बंधाव्युं.
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरचीने द्वारकाये तोरण बंधाव्यु
४६४ चारशें चोशठ वाव्यो करावी.
९०० नवशें कुवा कराव्या
३७३७१८८००सर्व मली त्रण अब्ज तहोत्तर क्रोड बहोंतेर लाख अढार हजार आठशें शोल लोढीयें चणा एटलु द्रव्य पुण्य माटें खर्च्युं संवत् १२९८ मां वस्तुपालें स्वर्गारोहण कर्युं.

हवे ए वस्तुपाल अने तेजपाल वेहु नाइयो जे
वारे तीर्थयात्रायें गया तेवारें साथे जे परिवार
लीधो हतो ते लखीये छैये

२४ चोवीश रथ, हाथीदांतना सघमां हता
४५०० चार हजार ने पांचशें सहेज वाला सघमां हता
४५०० चार हजार नें पाचशें गाडलां सघमा हता
११०० अगीयारशें वहेल हती
५०५ पाचशे ने पाच पालखी साथे हती
२००० बे हजार पोठीया हता
७०० सातशे सुखासन सघमां हता
२२०० बे हजार बशें श्वेतांबर साधु साथे हता
११०० अगीआरशें दिगम्बर वेपधारी साधु
४०८ चारशे ने आठ भट साथे हता
४५० चारशे ने पचाश जैन गायन करनारा भोजक सघमा हता
१००० एक हजार कदोइ मीठाइ करनारा साथे हता
३३०० त्रण हजार ने त्रणशें चारण हता
३३०० त्रण हजार ने त्रणशें नाट हता
१३५० कुंभार माटीना वासण बनावनारा तेरशेने पचाश साथे लीधा हता
४००० चार हजार घोडा साथे हता

७००००० सात लाख माणस साथे हता
५०० पांचशें सुतार साथे हता
३५० त्रणशे ने पच्चाश दीवटिया साथे हता.
१००० एक हजार लुहार साथें हता
एटला सघना परिवार सहित यात्रायें फर्या

हवे बीजा पण म्होटा म्होटा संसारी काम कर्यां ते लखीयें छेयें
३६ छत्रीश गढ कराव्या
६३ त्रेशठ वखत लढाइ करवा माटे संग्रामे चडीने बल फोरव्यु
२४ चोवीश विरुदावली बोलावी
१८ अढार वर्ष व्यापार कर्यो
१००० एक हजार वर्षासन आप्यां.
४ चार राजा सेवा करता हता
१८०० अढारशे वहाण कराव्यां हतां
वस्तुपाल तेजपालनी उदारताज आ पुस्तकमां मांगलिक रुपे आद्यमां नाखी छे एमणे जे अन्य यवनादिकोना स्थानकोमां द्रव्य व्यय कर्युं छे ते पण जैनने दीपाववा माटेज छे ते एमनां चरित्र वांचवाथी स्पष्ट समजवामा आवशे आहि ग्रंथ गौरव थाय माटे नथी लख्यु वस्तुपाल संवत् १२९८ स्वर्गारोहण थया अने तेजपाल संवत् १३०८ मां स्वर्गारोहण थया छे इति श्रेय ॥

॥ अथ लेश्यास्वभाव दोहा ॥

षटलेश्या कहि जीवने, कृष्ण नील कापोत ॥ ते जो पद्म वळी शुक्ल, परिणामे सब होत ॥ १ ॥ कवि यारा षट एकला, काष्ठ भारके काज ॥ भूख लगी ज ब आम्रतरु, देख्यो सफल समाज ॥ २ ॥ कृष्णा थड काटण कहे, माला काटण नील ॥ कहे कापो ति लघु मालि सब, फल ल्यो तेजस लील ॥ ३ ॥ पद्म कहे पक्कफल लियो, शुक्ल कहे सताव ॥ धरती पडि या पक्क फल, ल्यो खावो कहे जाव ॥ ४ ॥ जिनकी जेसी लेशिया, तैसा बांधे कर्म ॥ सद्गुरुकी गम जो मिले, जाय जगतको भर्म ॥ ५ ॥ इति षट्लेश्या स्वरूप दोहा समाप्त ॥

आ पुस्तकमां आवेला चित्रोनी

हकीगत संक्षेपथी समाप्त ॥